Gupta period (part -11)

3 चंद्रगोमिन

ये छठी शताब्दी के प्रथम चरण से सम्बन्धित माने जाते है. ये बांग्लादेश के राजशाही जिले के वारेन्द्र के निवासी थे ये नालंदा में बौद्ध विद्वान के रूप में निवास करते थे. ये बौद्ध धर्म के महायान के योगाचार शाखा के आचार्य माने जाते है. ये माध्यमिक शाखा के शुन्यवाद के आचार्य चंद्रकृति से शास्त्रार्थ करने नालंदा विहार आये थे. जिसमें ये विजयी रहे थे.

ये प्रसिद्ध व्याकरणाचार्य भी थे. पाणिनि कृत अष्टाध्यायी तथा पतंजलि के महाभाष्य को उत्तर भारत में पुर्नजीवित करने का श्रेय इन्हीं को जाता है. इन्होने इन दोनो पुस्तको का पुर्नउद्धार किया था.

इन्होने 'चंद्रव्याकरण' नामक संस्कृत व्याकरण ग्रंथ की रचना की.

महायान संप्रदाय के सभी ग्रंथ संस्कृत में है जिसके अध्ययन के लिये चंद्रव्याकरण का सहारा लिया जाता है.

उल्लेखनिय है कि जयादित्य और वामन ने सन् 650 A.D. में पाणिनि के अष्टाध्यायी पर 'जिसमा शिमावृति' नामक ग्रंथ की रचना की. इसमें भी चंद्रव्याकरण का सहयोग लिया गया है.

कश्मीर, तिब्बत, नेपाल और सिंहल के बौद्धो में चंद्रव्याकरण ज्यादा प्रसिद्ध रहा है.

3 अमर सिंह

गुप्त युगीन एक प्रसिद्ध कोशकार कोशाकार

बौद्ध मतावलंबी

अपने कोश के आरंभ में विशिष्ट देवताओं की नामवली में उन्होंने बुद्ध का नाम सर्वप्रथम लिया है।

अनुश्रुतियों के अनुसार, वे C.U विक्रमादित्य के नवरत्नों में से एक थे। उन्होंने 'नामलिंगानुशासन' नामक कोश की रचना की। चूंकि इसे अमर सिंह ने लिखा है इसलिये इस पुस्तक को 'अमरकोश' कहा जाता है।

- इसके अतिरिक्त.

वात्सयायन कृत - कामसूत्र
वज्जिका कृत - कौमुदी महोत्सव
दण्डिन कृत - दशकुमार चरित, अवंति सुन्दरी कथा
काव्यादर्श
भारवि कृत - किरातार्जुनियम इत्यादि से भी इस काल के इतिहास की जानकारी मिलती है।